राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और कक्षा 3 की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वीणा 1' की समीक्षा

नीतू यादव*
मोनू सिंह गुर्जर**

राष्ट्र की उन्नति में शिक्षा सबसे सशक्त माध्यम के रूप में सामने आई है। शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र के विकास को उत्तरोत्तर उन्नति के शिखर पर ले जाया जा सकता है, समाज में परिवर्तन अपेक्षित है; बदलते समय के साथ समायोजन स्थापित करने में भी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए समाज में विद्यालयों की स्थापना की जाती है। विद्यालय औपचारिक शिक्षा का एक प्रभावशाली माध्यम है, जिसमें शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या का निर्माण कर उसे लागू किया जाता है। पाठ्यक्रम को सुव्यवस्थित रूप से व्यवहार में लाने के लिए पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया जाता है। प्रस्तुत शोध में कक्षा 3 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'वीणा 1' का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया जा रहा है। यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 के संकल्प के अनुरूप तैयार की गई है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद द्वारा इस पुस्तक के माध्यम से शैक्षिक गुणवत्ता में संवर्धन करने का प्रयास किया गया है। हिंदी भाषा की 'वीणा' पुस्तक के माध्यम से बच्चों में भाषायी कौशलों तथा समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसमें एकीकृत और बहु-विषयक उपागमों का भी प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत लेख में हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वीणा 1' के विषय में हम जानेंगे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्धारित उद्देश्यों तथा अपेक्षाओं को पूरा करने में यह पुस्तक कितनी सक्षम है।

प्रस्तावना

शिक्षा संस्कृति के हस्तांतरण संरक्षण एवं संवर्धन का प्रमुख माध्यम है। शिक्षा ही राष्ट्र की अमूल्य संपत्ति है तथा किसी भी राष्ट्र की उन्नति में शिक्षा की महती भूमिका होती है। शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले देश का अनिवार्य लक्षण है और शिक्षा के अभाव में प्रगति कभी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती। शिक्षा राष्ट्रीय

*प्राचार्य, आर्यन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, उत्तम नगर, नई दिल्ली 110 059
**सहायक आचार्य, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

विकास की गति तीव्र कर वर्तमान एवं भविष्य के लिए नवीन आयाम प्रदान करती है। शिक्षा वह प्रकाश है, जो बालक के जीवन में समस्त अंधकार को दूर कर बालक के जीवन को प्रकाशित करती है। शिक्षा की प्रक्रिया को निश्चित, नियमित एवं उपयोगी बनाने के लिए सार्थक क्रियाओं की एक कार्मिक योजना प्रस्तुत की जाती है, जिसे हम पाठ्यक्रम कहते हैं। एक आदर्श शिक्षा-व्यवस्था में पाठ्यपुस्तक, पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है। पाठ्यपुस्तक वे पुस्तकें हैं, जो किसी स्तर के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यचर्यानुसार तैयार की जाती हैं। पाठ्यपुस्तकों में तथ्य एवं सूचनाएँ निहित होती हैं जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को उनके समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए ज्ञान एवं समझ का विकास किया जाता है।

पाठ्यपुस्तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग है। पाठ्यपुस्तक ज्ञान के संचय एवं संचार करने का सशक्त माध्यम होने के साथ ही ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तक क्रमबद्ध अध्ययन, सुव्यवस्थित, पुष्टिकरण, समीक्षा और आगामी अध्ययन का आधार होती है। पाठ्यपुस्तक न केवल विद्यार्थियों के लिए पथ प्रदर्शक हैं, बल्कि अध्यापकों के शिक्षण कार्य में भी सहायक होती हैं। अतः यह आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तक का निर्माण विद्यार्थी के वर्तमान एवं भावी जीवन में उपयोगिता को ध्यान में रखकर किया जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 10+2 वाली स्कूली व्यवस्था को 3–18 वर्ष के सभी बच्चो के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय आधार पर 5 + 3 + 3 + 4 की नई व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात करती है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ 8), जिसके तहत क्रमशः बुनियादी स्तर (दो भागों में अर्थात आँगनबाड़ी या प्री-स्कूल के 3 साल + प्राथमिक स्कूल में कक्षा 1 और 2, 3 से 8 आयु वर्ग), प्रारंभिक स्तर (कक्षा 3–5, 8 से 11 आयु वर्ग, मध्य स्तर स्कूल स्टेज (कक्षा 6–8, 11 से 14 आयु वर्ग) और माध्यमिक स्तर (कक्षा 9–12; दो चरण में, यानी पहले चरण में 9 और 10 तथा दूसरे में 11 और 12, 14 से 18 आयु वर्ग) शामिल होंगे (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बिंदु 4.1, पृष्ठ 16)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संस्तुत शिक्षा का बुनियादी स्तर, बच्चों के समग्र विकास के लिए है। उन्हें न केवल हमारे देश की संस्कृति और संवैधानिक व्यवस्था से उद्भूत अमूल्य संस्कारों को आत्मसात करने का अवसर प्रदान करता है; अपितु बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता अर्जित करने का भी मौका देता है, ताकि वे अधिक चुनौतीपूर्ण प्रारंभिक स्तर के लिए तैयार हो सकें।

प्रारंभिक स्तर, बुनियादी और मध्य स्तर के बीच एक सेतु का काम करता है। इस स्तर की तीन वर्षीय अवधि है जिसमें कक्षा 3–5 (8 से 11 आयु वर्ग) सम्मिलित हैं। इस स्तर पर बच्चों को मिलने वाली शिक्षा, आवश्यक रूप से आधारभूत स्तर के शिक्षा उपागम पर आधारित होगी। खोज और गातिविधि से प्रेरित सीखने-सिखाने की विधियाँ होंगी। साथ ही बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं के माध्यम से औपचारिक अधिगम प्रक्रियाओं से भी परिचित कराया जाएगा। इसका उद्देश्य बच्चों को कठिन स्थिति

में डालना नहीं है, अपितु उनमें पठन, लेखन एवं वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से समग्र अधिगम एवं आत्म-अन्वेषण के लिए सभी विषयों के द्वारा आधार तैयार करना है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बिंदु 4.2, पृष्ठ 17)

बच्चों के समग्र विकास में भाषा का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है तथा कहा गया है कि भाषा से जुड़े मूलभूत कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) पर प्रारंभ से ही ध्यान देना आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति का महत्व बताते हुए बच्चों को उनकी मातृभाषा/घर की भाषा या निज भाषा में सीखने पर बल दिया है। बच्चों की अपनी मातृभाषा/घर की भाषा या निज भाषा के महत्व को भारतेंदु जी की निम्न पंक्तियों के माध्यम से समझ सकते हैं—

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

अर्थात इन पंक्तियों में, सीखने में अपनी मातृभाषा/निजभाषा के महत्व को दर्शाया गया है कि अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है और मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। मातृभाषा सीखने की प्रक्रिया को सहज, सरल एवं स्वाभाविक बनाती है।

भाषा के प्रारंभिक स्तर के महत्व को समझने के लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संस्तुति पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रारंभिक स्तर की भाषा शिक्षा को और अधिक मजबूत बनाने के लिए कक्षा 3 की हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तक 'वीणा 1' का निर्माण किया गया है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का अक्षरशः अनुपालन करते हुए, यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है, जो इस स्तर की शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में भाषायी पाठ्यक्रम के लक्ष्य—

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को ध्यान में रखते हुए विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ. -एस.ई.) ने स्तरानुसार भाषा की पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ एवं सीखने के प्रतिफल चिह्नित किए हैं। प्रारंभिक स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्यक लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

1. विचारों को सुसंगत रूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल को विकसित करना।
2. परिचित और अपरिचित पाठ्यपुस्तक (जैसे—गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थबोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित करना।

3. अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सरल और यौगिक वाक्य संरचनाओं को लिखने की क्षमता विकसित करना।
4. विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों (घर और स्कूल के अनुभव) में व्यापक शब्द भंडार विकसित करना।
5. पढ़ने में रुचि और प्राथमिकताओं को विकसित करना।

इन लक्ष्यों की प्राप्ति के उद्देश्यों से 'वीणा 1' पाठ्यपुस्तक का निर्माण सफल प्रयास है। पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ही ध्यान में रखते हुए दक्षताओं की निरंतरता में सीखने के प्रतिफल पर ध्यान दिया गया है।

बुनियादी स्तर के बाद प्रारंभिक स्तर पर भाषा के महत्व को समझने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षा को और मजबूत बनाने के लिए कक्षा 3 की हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तक 'वीणा 1' का निर्माण किया गया है, प्रस्तुत लेख द्वारा 'वीणा 1' की प्रमुख विशेषताओं यथा रचनाओं की विविधता, शिक्षण उपागम, अभ्यास कार्यों की प्रकृति आदि पर प्रकाश डाला गया है। 'वीणा 1' के अध्ययन-अध्यापन के दौरान ये महत्वपूर्ण बिंदु सहायक सिद्ध होंगे।

कक्षा 3 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक 'वीणा 1' में भाषा में अन्वेषण, सर्जनात्मक चिंतन और तार्किक चेतना के माध्यम से ज्ञान सृजन को प्रोत्साहन के साथ-साथ सौंदर्यबोध, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक पक्ष को समझने पर बल दिया गया है तथा इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक 'वीणा 1' के निर्माण के पूर्व निम्न बातों को ध्यान में रखा गया है —

- पुस्तक में हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं — कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, एकांकी, पहेली आदि से बच्चों को रुचिपूर्ण विधि से परिचय कराया गया है।
- पुस्तक में पाठोपरांत अभ्यासों को इस प्रकार विकसित किया गया है कि बच्चों में भाषा संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने से संबंधी रुचि का विकास होगा।
- पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।
- पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को चुना गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं तथा उनके समग्र विकास में सहायक हैं, जैसे — हमारा पर्यावरण, हमारे मित्र, आओ खेलें, अपना-अपना काम, हमारा देश।
- पुस्तक हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से बच्चों में समावेशी दृष्टि लाने और भारतीय संस्कृति की विविधिता के प्रति सकारात्मक बोध विकसित करने के उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा चिह्नित करती है।
- पुस्तक में विभिन्न भाषायी कौशलों, जैसे — समझ के साथ बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना और रचना आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए बच्चों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।

- पुस्तक में बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए पाठों को रोचक बनाने के लिए कार्यों में विविधिता लाने का भरपूर प्रयास किया गया है।

इकाई एक — हमारा पर्यावरण

1. सीखो
2. चींटी
3. कितने पैर?
4. बया हमारी चिड़िया रानी!
5. आम का पेड़

इकाई दो — हमारे मित्र

6. बीरबल की खिचड़ी
7. मित्र को पत्र
8. चतुर गीदड़
9. प्रकृति पर्व — फूलदेई

इकाई तीन — आओ खेलें

10. रस्साकशी
11. एक जादुई पिटारा

इकाई चार — अपना-अपना काम

12. अपना-अपना काम
13. पेड़ों की अम्मा 'तिमक्का'
14. किसान की होशियारी

इकाई पाँच — हमारा देश

15. भारत
16. चंद्रयान (संवाद)
17. बोलने वाली माँद
18. हम अनेक किंतु एक

पुस्तक में इन 18 पाठों के अतिरिक्त 5 अन्य कविताएँ शामिल की गई हैं, जो केवल पढ़ने के लिए हैं और इनका उद्देश्य बच्चों को कविता का रसास्वादन और पठन कौशल को विकसित करना है, ये इस प्रकार हैं —

- चींटी और हाथी की छुपन-छुपाई
- दोस्त के जूते
- सुनो भई गप्प
- ट्रैफिक जाम
- हिंद देश के निवासी

पाठ्यपुस्तक विश्लेषण से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि किसी भी पाठ्यपुस्तक को उसकी विशेषता के आधार पर दो भागों में बाँटा जाता है। प्रथम पुस्तक के बाह्य प्रारूप पर आधारित विशेषताएँ तथा दूसरा विषयवस्तु पर आधारित विशेषताएँ। बाह्य पक्ष के अंतर्गत पुस्तक का आकार, पुस्तक की संरचना (डिजाइन), पुस्तक का आवरण पृष्ठ, कागज की गुणवत्ता, मुद्रण, फोंट, पुस्तक का मूल्य आदि आते हैं। पाठ्यपुस्तक के आंतरिक पक्ष (विषयवस्तु पर आधारित) के अंतर्गत पुस्तक की विषयवस्तु, मनोवैज्ञानिक आधार, रुचिकर, शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक, जीवन से संबंधित, पूर्व-ज्ञान पर आधारित, मौलिकता, बच्चों के स्तरानुकूल, पुस्तक की भाषा में सरलता और स्पष्टता, पुस्तक के चित्र, पाठोपरांत दिए गए अभ्यास-प्रश्न तथा पुस्तक की विषय सूची आते हैं। इन्हीं बिंदुओं को आधार बनाकर इस शोध-पत्र में 'वीणा 1' पुस्तक का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है —

सर्वप्रथम पुस्तक 'वीणा 1' का आवरण पृष्ठ बहुत ही सुंदर, आकर्षक और सांस्कृतिक रूप

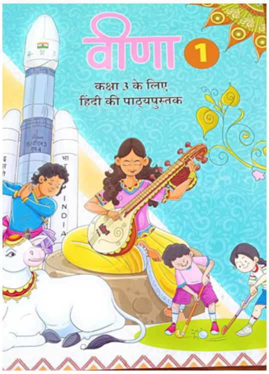

से समृद्ध है। आवरण पृष्ठ को देख कर यह विदित होता है कि एक लड़की हाथों में वीणा लिए बजा रही है; एक लड़का नृत्य कर रहा है; पास में बैठी गाय भी जैसे कान लगा कर धुन सुन रही हो, पुस्तक पर दो छोटे बच्चे खेल-खेलते हुए दिखाई दे रहें हैं। इसके अलावा आवरण पृष्ठ पर एक रॉकेट का चित्र भी है जो भारत के प्रचीन गौरव व आधुनिक विकास का सुंदर संयोजन प्रस्तुत करता है। आवरण पृष्ठ पर कुछ पशु-पक्षी और लताएँ भी देखी जा सकती हैं जो प्रकृति के साथ मानवजन का सामंजस्य और संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र के द्योतक हैं। यदि आवरण पृष्ठ की संपूर्णता को देखें तो यह बहु-विषयक संप्रत्यय को प्रोत्साहित कर रहा है। पुस्तक के अक्षर बड़े-बड़े हैं, ताकि बच्चे आसानी से पढ़ सकें, साथ ही चित्र भी आकार में बड़े व रंगीन है। यह पुस्तक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की वेबसाइट पर उपलब्ध है, जो सभी के लिए प्राप्य है।

वीणा का भीतरी कलेवर— वीणा की विषयवस्तु को थीमों में बाँटकर प्रस्तुत किया है। ये थीम पाँच इकायों में विभाजित हैं—

इकाई एक — हमारा पर्यावरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में खेल-आधारित अधिगम तथा शिक्षण-अधिगम की सभी गतिविधियों में बच्चों को केंद्र में रखकर निर्माणवादी शिक्षा दर्शन को अपनाते हुए अधिगम परिस्थितियों के विकास पर बल दिया गया है। निर्माणवाद के इसी मूलमंत्र को सारगर्भित करते हुए 'हमारा पर्यावरण' इकाई की विषयवस्तु को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत इकाई में 5 पाठ हैं, जिनमें सीखो, चींटी, बया हमारी चिड़िया रानी! कविताएँ और 'आम का पेड़' कहानी है तथा 'कितने पैर?' पाठ जीव-जगत का रुचिपूर्ण संसार प्रस्तुत कर रहा है। सभी पाठों में विभिन्न रोचक चित्रों एवं कार्टूनों के माध्यम से सामग्री को और अधिक रोचक बनाने का प्रयास किया गया है। प्रथम पाठ का शीर्षक है 'सीखो' जो कि एक आनंदमयी कविता है, जिसमें प्रकृति का बहुत ही सुंदर चित्रण किया गया है कि प्रकृति से हमें क्या-क्या सीखना चाहिए। इसे हम नैतिक मूल्यों से जोड़ सकते हैं, यह कविता बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करने में सक्षम प्रतीत हो रही है। इसके साथ-साथ कविता के माध्यम से बच्चों में प्रकृति की अनोखी दुनिया की समझ विकसित करने का अवसर प्रदान किया गया है। दूसरा पाठ — 'चींटी' जो एक आनंदमयी कविता है, जिसमें विभिन्न रंग-बिरंगे चित्रों के माध्यम से चींटी को मेहनत करते हुए दिखाया गया है। जिससे बच्चों

को जीवन में श्रम के महत्व को समझाने का प्रयास किया गया है। पाठ 3 कितने पैर? में जीव-जंतुओं के संसार को दर्शाया गया है, जिसके माध्यम से बच्चे विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु, उनके पैरों के विषय में, मुहावरों के प्रयोग तथा हास्य की जानकारी प्राप्त करेंगे। पाठ 4 'बया हमारी चिड़िया रानी!' है। यह भी एक आनंदमयी कविता है, जिसके माध्यम से बच्चों को यह सिखाने का प्रयास किया गया है कि जिस प्रकार मनुष्य रहने के लिए अपने घर बनाते हैं, उसी प्रकार पक्षी भी अपने लिए घोंसले का निर्माण करते हैं। बच्चे इस कविता के सस्वर वाचन के साथ-साथ अपने अनुभवों की मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त करेंगे। पाठ 5 'आम का पेड़' कहानी विधा है जिसमें बच्चों को पर्यावरण तथा पेड़-पौधों से संबंधित जानकारियाँ प्रदान करने की कोशिश की गई है तथा पर्यावरण के महत्व को कहानी के माध्यम से बहुत ही सरल तरीके से प्रस्तुत किया है।

इकाई में सभी पाठों से संबंधित क्रियाकलापों में बच्चों को संलग्न करने के उद्देश्य से 'मिलान कीजिए', 'चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है', 'बूझो तो जानें', 'सोचिए और लिखिए', 'शब्दों का खेल', 'आइए बनाइए' जैसे अभ्यासों को रखा गया है। पाठों में संप्रत्ययों को समझाने के लिए विभिन्न रंगीन चित्रों की सहायता ली गई है। बच्चों द्वारा स्वानुभव के माध्यम से ज्ञान निर्माण करने के लिए गतिविधि आधारित क्रियाकलाप दिए गए हैं, जो अत्यधिक रोचक हैं। पाठ में स्थान-स्थान पर विषयवस्तु से संबंधित चर्चा करने के लिए विभिन्न उद्बोधन भी दिए गए हैं। कुछ पाठों के अंत में 'बूझो तो जानें' पहेली के माध्यम से बच्चों में तार्किक चिंतन को बढ़ावा दिया गया है। 'बया हमारी चिड़िया रानी!' पाठ के अंत में कागज से चिड़िया बनाने की गतिविधि जैसी बच्चों को क्रिया-आधारित गतिविधियों के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करती है और कला समेकन को रेखांकित करती है। 'आम का पेड़' पाठ के अंत में रंगों के माध्यम से पेड़ बनाना सिखाया गया है, जो बच्चों को कला के प्रति रुचि विकसित करने का तरीका दर्शाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रथम इकाई पर्यावरण से संबंधित है तथा इनमें संप्रत्ययों को समझाने के लिए विभिन्न विषयों के ज्ञान को एकीकृत किया गया है, जो बालक के समग्र विकास में सहायक है और नीति भी इसी बात की अनुशंसा करती है।

इकाई दो — हमारे मित्र

पाठ्यपुस्तक में दूसरी इकाई का नाम 'हमारे मित्र' है जिसमें कुल 4 पाठों को सम्मिलित किया गया है। इस इकाई में क्रमश: 'बीरबल की खिचड़ी', 'मित्र को पत्र', 'चतुर गीदड़' और 'प्रकृति पर्व — फूलदेई' है। यह इकाई व्यक्ति और परिवेश से मित्रता जैसे संबंध के आस-पास बुनी हुई है। इस इकाई में साहित्य की

विभिन्न विधाओं — कहानी, एकांकी, पत्र आदि से बच्चों को रुचिपूर्ण विधि से परिचित कराया गया है। बच्चों को कहानी सुनाना या कहानी सुनना हमारी भारतीय संस्कृति की एक समृद्ध परंपरा रही है। बाल्यावस्था में बच्चों को कहानी सुनना बहुत रुचिकर लगता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पाठ 6 में 'बीरबल की खिचड़ी' कहानी को प्रस्तुत किया गया है। इस पाठ की भाषा बहुत सरल है। 'बीरबल की खिचड़ी' कहानी में चतुराई को दर्शाते हुए बच्चों को यह सीख दी गई है कि दूसरों की सफलता के पीछे किए गए परिश्रम को जाने बग़ैर उनके बारे में राय नहीं बनानी चाहिए। इस प्रकार की कहानी के माध्यम से बच्चों का मनोरंजन होता है और साथ ही उन्हें कई ज्ञानवर्धक चीजें सीखने को भी मिलती हैं। पाठ 7 'मित्र को पत्र' साहित्य की 'पत्र' विधा पर आधारित है, जिसमें एक मित्र अपने दूसरे मित्र को पत्र के माध्यम से भारत के पूर्वोत्तर प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन कर रहा है जो बच्चों को अपने परिवेश, परंपराओं, सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ता है। यह पाठ बच्चों में मित्रता की भावना को विकसित करते हुए मित्रता के प्रभाव को भी दर्शाता है कि जीवन में मित्रता की क्या महत्वता है और एक मित्र की संगति का व्यक्ति पर अच्छा और बुरा प्रभाव पड़ता है। पाठ 8 'चतुर गीदड़' एकांकी विधा है जिसमें कछुआ और मगरमच्छ, गीदड़ को धोखा (चकमा) दे कर अपने जाल में फँसाना चाहते हैं, परंतु गीदड़ अपनी सूझ-बूझ तथा समझदारी से उनकी चाल में नहीं फँसता। यह एकांकी बहुत ही मनोरंजक है और बच्चों को संकेत देती है कि बिना सोचे-समझे कोई काम नहीं करना चाहिए, उससे अंत में नुकसान ही होता है। हमेशा सोच-समझकर अपनी बुद्धिमानी का सही उपयोग करना चाहिए जिससे बच्चों में चिंतन कौशल का विकास होगा। पाठ 9 'प्रकृति पर्व-फूलदेई' में उत्तराखंड के एक प्रसिद्ध त्योहार का अद्भुत वर्णन किया है। पाठ के माध्यम से बच्चों को प्रकृति प्रेम और सामाजिक सद्भाव की सीख बचपन से ही देने पर बल दिया गया है। यह पाठ बच्चों को त्योहार, लोकगीतों, मान्यताओं और परंपराओं से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। यह प्रकृति तथा संस्कृति से जुड़े रहने की प्रेरणा भी देता है। पूरी इकाई के विभिन्न पाठों में जगह-जगह पर विभिन्न रोचक चित्र, मनोरंजक क्रियाकलाप तथा खेलों के माध्यम से पाठों की अवधारणाओं को समझाने का प्रयास किया गया है। पाठोपरांत बच्चों के आकलन हेतु 'सोचिए और लिखिए', 'भाषा की बात', 'वर्ग पहेली' जैसे अभ्यास प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक पाठ के आरंभ में 'बातचीत के लिए' शीर्षक से कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिसमें सभी बच्चों को अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहन देना है। इस प्रकार के प्रश्नों का उद्देश्य बच्चों में मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम, बच्चों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना है।

इकाई तीन — आओ खेलें

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 खेल-आधारित अधिगम की बात करती है जिसके माध्यम से बच्चे आनंदमयी तरीके से सीखते हैं क्योंकि बचपन में उन्हें खेलना सर्वप्रिय होता है। खेल और आनंद बच्चों के जीवन का अनिवार्य भाग होता है। इसे ध्यान में रखते हुए इस इकाई में 'सुनो भई गप्प', 'रस्साकशी', 'ट्रैफिक

जाम' और 'एक जादुई पिटारा' जैसी आनंदमयी कविताएँ सम्मिलित की गई हैं। पाठ 10 'रस्साकशी' एक खेल गीत है जिसे बहुत ही सुंदर चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है। चित्र में बच्चे रस्साकशी का खेल, खेल रहे हैं तथा साथ ही खेलते-खेलते गीत का आनंद भी ले रहे हैं। यह एक मनोरंजनात्मक खेल गीत है। इस खेल गीत में समूह में खेलते हुए बच्चों की मस्ती और उनकी मेहनत का चित्रण किया गया है। रस्साकशी खेल के माध्यम से बच्चों की एकता, जोश और मेहनत को दर्शाया गया है। कविता बहुत ही सरल भाषा में लिखी गई है, जो बच्चों को मेहनत और टीमवर्क (समूहकार्य) की सीख देती है तथा बच्चों को संदेश देती है कि जीवन में संघर्ष और प्रतिस्पर्धा आवश्यक है। पाठ 11 'एक जादुई पिटारा' आनंदमयी कविता है। विभिन्न रंग-बिरंगे चित्रों के माध्यम से कविता को मजेदार बनाया गया है। कविता में दर्शाया गया है कि जादुई पिटारा एक ऐसा खास डिब्बा है जिसमें से बहुत सारी जादुई और मजेदार चीजें निकलती हैं और ये सभी चीजें हैरान करती हैं और बच्चों को एक कल्पनाओं की दुनिया में ले जाती हैं। इस कविता से पता चलता है कि बच्चों के लिए कल्पना करना कितना मजेदार होता है और हर छोटी चीज में से भी कुछ नया सीखने को मिलता है। 'जादुई पिटारा' कविता का मुख्य उद्देश्य खेल-आधारित शिक्षा के माध्यम से आधारभूत शिक्षा को बढ़ाना है जिससे बच्चों के लिए सीखना आनंदमय बन जाता है। पूरी कविता में तुकांत शब्दों का प्रयोग किया गया है जिससे बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ शब्द भंडार में भी वृद्धि होगी। पाठों के अभ्यास में बच्चों को छोटे-छोटे वाक्य निर्माण की गतिविधियाँ दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये कठिन न हो तथा बच्चों की कक्षा के स्तर के अनुरूप हो। बच्चे सरलता और आनंद के साथ इन अभ्यासों को करें। 'रस्साकशी' कविता में यह प्रश्न दिया गया है , "आपका सबसे प्रिय खेल कौन-सा है? उसके बारे में चार-पाँच पंक्तियाँ लिखिए?" बोलने से लिखित भाषा की ओर बच्चों की भाषा-यात्रा सुगम और सरल हो, इसका ध्यान रखा गया है। बच्चों में भाषा की समझ और शब्द-भंडार की वृद्धि के लिए 'खोजिए और लिखिए' प्रश्न के अंतर्गत तुकांत शब्दों को ढूँढ़कर लिखने को कहा गया है। जिज्ञासा और खोजबीन करना बच्चों की मूल प्रवृचि में से एक है, इस प्रकार के प्रश्न बच्चों में खोजबीन प्रवृचि को बढ़ावा देते हैं। 'रस्साकशी' और 'एक जादुई पिटारा' दोनों कविताओं के अभ्यास-कार्य में बच्चों को चित्रों में रंग भरने से संबंधित क्रियाकलाप दिया गया है जिससे बच्चों में सृजनात्मक विकास होगा और उनमें कला के प्रति रुचि जागृत होगी। इस इकाई में 'सुनो

भई गप्प' और 'ट्रैफिक जाम' दो कविताएँ केवल पढ़ने के लिए दी गई हैं जिनका उद्देश्य बच्चों में पठन कौशल को विकसित करना है।

इकाई चार — अपना-अपना काम

प्रारंभिक वर्षों में बच्चों को कहानी सुनना बहुत ही पसंद होता है, शुरुआती वर्षों में बच्चों के विकास में कहानियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों को कहानी न केवल मनोरंजन के लिए सुनाई जाती है, बल्कि कहानी से बच्चों का समग्र विकास भी होता है, वे मनोरंजन के साथ-साथ बहुत-सी शिक्षाप्रद बातें भी कहानियों से सीखते हैं। इकाई चार में शिक्षाप्रद कहानियाँ तथा एक प्रेरक निबंध को समिल्लित किया गया है। 'अपना-अपना काम', 'पेड़ों की अम्मा' 'तिमक्का' और 'किसान की होशियारी', इन कहानियों में श्रम का महत्व और उसकी विविधता दिखाई गई है। श्रम के मूल्य को बच्चों हेतु ग्राह्य बनाने के लिए 'अपना-अपना काम' और 'किसान की होशियारी' प्रेरक कहानियाँ ली गई हैं। पाठ 12 'अपना-अपना काम' एक मनोरंजनात्मक कहानी है जिसमें विभिन्न रंग-बिरंगे चित्रों के माध्यम से एक छोटी बच्ची को प्रकृति से बातें करते हुए दर्शाया गया है। पाठ की भाषा बहुत ही सरल है। कहानी का उद्देश्य बच्चों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करना है जिससे वे सही और गलत का निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर सकें। कहानी में मधुमक्खी, पेड़ और चिड़िया के माध्यम से जीवन में परिश्रम का संदेश दिया गया है और यह भी कि सभी को जीवन में कुछ न कुछ प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना पड़ता है। इसके साथ ही कहानी में पेड़ के उदाहरण से परोपकार की भावना को दर्शाया गया है। पेड़ अपने लिए फल नहीं उगाता, बल्कि अपने फल, पत्ती, शाखा दूसरों को देता है। पेड़ में परोपकार की भावना होती है और वह दूसरों की सेवा करके सबको प्रेरणा देता है। कहानी में बताया गया है कि हर व्यक्ति को अपने काम को जिम्मेदारी से करना चाहिए।

पाठ 13 'पेड़ों की अम्मा 'तिमक्का'' सरल रूप से प्रस्तुत किया गया जीवन वृत्त है, जिसके माध्यम से बच्चों को पर्यावरण संरक्षण तथा पेड़ों के महत्व की जानकारी दी गई है। पाठ 14 'किसान की होशियारी' सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत की गई एक रोचक कहानी है। कहानी में प्रदर्शित किए गए रंगीन चित्र कहानी के भाव को प्रकट करने में उपयुक्त नजर आ रहे हैं। कहानी में दिखाया गया है कि किस प्रकार किसान बुद्धिमता से तथा सही निर्णय लेकर अपनी समस्या का समाधान करता है। यह कहानी बच्चों में निर्णय लेने की क्षमता का विकास करती है, कि किस प्रकार सोच समझकर काम करने से कठिन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। 'अपना-अपना काम' पाठ की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें बच्चों के लिए क्रियाकलापों की संख्या बहुत अधिक है, जैसे— 'कहानी से' बच्चों को अपने पूरे दिन के काम की सूची बनाना, घर में कौन-कौन से

काम किसके द्वारा किए जाते हैं? लिखें। सिमरन और मधुमक्खी की बातें, कहानी की वाक्य पूर्ति लिखना, शहद क्या-क्या काम आता है? आदि लिखना। इस प्रकार की गतिविधियों से बच्चों में सोचने-समझने के कौशल का विकास होता है तथा ये गतिविधियाँ बच्चों में सृजनात्मक चिंतन को भी बढ़ावा देती हैं। बच्चों में रचनात्मकता और कलात्मक सौंदर्य बढ़ाने के लिए पाठ के अंत में कला से संबंधित गतिविधि दी गई है, जैसे 'एक फलदार पेड़ बनाकर उसमें रंग भरें'। इस प्रकार की गतिविधि से बच्चों में कला के प्रति रुचि उत्पन्न होती है तथा उनकी सूक्ष्म मांसपेशियों का भी विकास होता है। 'पेड़ों की अम्मा 'तिमक्का'' पाठ के अंत में बच्चों में भाषायी कौशल के अंतर्गत मौखिक कौशल विकास के लिए, 'बातचीत के लिए' प्रश्न दिए गए हैं तथा बच्चों की लेखन अभिव्यक्ति या लेखन कौशल को विकसित करने के लिए 'सोचिए और लिखिए' अभ्यास-प्रश्न दिए गए हैं। बच्चों में भाषायी ज्ञान को बढ़ाने के लिए 'भाषा की बात' में विभिन्न गतिविधियाँ दी गई हैं जिससे उनके चिंतन कौशल तथा शब्द भंडार में वृद्धि होगी। 'किसान की होशियारी' कहानी में बच्चों के आकलन हेतु 'भाषा की बात' में 'विराम चिह्न', 'मुहावरे' जैसे प्रश्नों को रखा गया है, ताकि वे इन संप्रत्ययों को समझकर इनका प्रयोग कर पाएँ। बच्चों के मनोरंजन तथा सोचने समझने की शक्ति को बढ़ाने के लिए एक 'वर्ग पहेली' दी गई है, जिसमें कुछ चित्र भी दिए गए हैं, जिनके माध्यम से बच्चे उस वर्ग पहेली को हल करेंगे। इस प्रकार के प्रश्नों (गतिविधि) से बच्चों में उत्सुकता बढ़ती है तथा उनमें सोचने-समझने की क्षमता का विकास होता है। इस पाठ में एक नई बात यह है कि इसमें 'आनंद के लिए' शीर्षक के अंतर्गत 'पहचानिए', 'वर्गीकृत कीजिए' जैसी गतिविधियाँ रखी गई हैं। कला शिक्षा को एकीकृत करते हुए, भालू का चित्र बनाकर रंग भरने की गतिविधि दी गई है तथा 'कुछ नया करें' शीर्षक में कल्पना करके बातचीत करने से संबंधी गतिविधि है जिससे बच्चों को कल्पना के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं। इस प्रकार, हम देखते हैं कि इस पूरी इकाई में सम्मिलित की गई गतिविधियाँ बच्चों में अमूर्त चिंतन के साथ-साथ सृजनात्मक जैसे मनोवैज्ञानिक गुणों का विकास करती हैं।

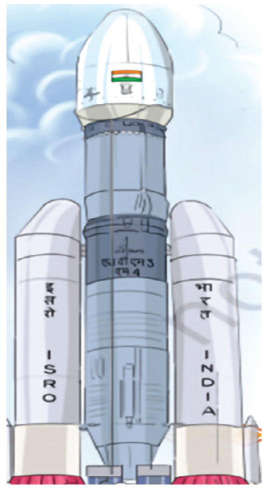

इकाई पाँच — हमारा देश

'वीणा 1' पाठ्यपुस्तक की 5वीं तथा अंतिम इकाई का शीर्षक 'हमारा देश' है। इसमें भारत देश की विविधताएँ उसका गौरव, कथा-परंपरा, खान-पान, संस्कृति और विविधता में एकता के तत्वों को प्रस्तुत किया गया है। जिससे बच्चे भाषा के माध्यम से अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़े रहें, क्योंकि बुनियादी एवं संवैधानिक विकास, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति सतर्कता, सामाजिक-भावात्मक अधिगम को प्राप्त करने का माध्यम भाषा ही है। प्रस्तुत इकाई में 4 पाठ हैं, जो

क्रमश: 'भारत', 'चंद्रयान (संवाद)', 'बोलने वाली माँद' और 'हम अनेक किंतु एक' हैं। इकाई के अंत में एक कविता दी गई है 'हिंद देश के निवासी' जो बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को ध्यान में रख, केवल पठन के लिए है, ताकि बच्चों में पठन कौशल का भी विकास किया जा सके। इस इकाई में हिंदी की गद्य और पद्य के अंतर्गत कहानी, कविता और संवाद को सम्मिलित किया गया है। पाठ 15 'भारत' एक आनंदमयी कविता है, जिसके माध्यम से बच्चे अपने भारतवर्ष के बारे में जान सकेंगे, साथ ही इस बात की पहचान कर सकेगें कि अपना भारतवर्ष दुनिया के सब देशों में क्यों अलग है और यह हम सबको प्यारा है। कविता में रंग-बिरंगे चित्र से भारत के गौरव तथा सुंदरता को दर्शाया गया है। यह कविता बच्चों में सौंदर्य के प्रति रुचि तथा देश के प्रति कर्तव्य सिखाती है। पाठ 16 'चंद्रयान (संवाद)' है, जो गद्य की 'संवाद' विधा में लिखा गया है जिसमें चित्र में एक अध्यापिका कक्षा में बच्चों के साथ संवाद करती नजर आ रही हैं। वह संवाद के माध्यम से बच्चों को चाँद तथा रॉकेट की जानकारी दे रही हैं। इस प्रकार के पाठों से बच्चों में नई-नई बातें जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी उत्पन्न होता है और इस पाठ के माध्यम से वे चंद्रयान अभियान से जुड़े लक्ष्यों को जानेंगे। वे जानेंगे कि हमारा देश विज्ञान के क्षेत्र में कितनी प्रगति कर रहा है। पाठ का संवाद शैली में होना बच्चों को विषय के प्रति रुचि और समझ बढ़ाने में सहायक होता है। फिर भी कक्षा 3 के बच्चों के मानसिक स्तर के अनुरूप यह पाठ थोड़ा जटिल है। 'चंद्रयान मिशन', 'विक्रम लैंडर', 'प्रज्ञान', आदि संप्रत्ययों को समझना थोड़ा मुश्किल है। इस दृष्टिकोण से इस प्रकरण के संप्रत्ययों को आगे की कक्षाओं में परिचित करवा कर इसे और अधिक उद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है। पाठ 17 'बोलने वाली माँद' कहानी बच्चो के मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षाप्रद कहानी है। चित्रों के माध्यम से पूरी कहानी को दर्शया गया है। कहानी में सियार ने अपनी बुद्धि और चतुराई का इस्तेमाल करके अपनी जान बचाई। इस कहानी के माध्यम से बच्चों में सूझ-बूझ के कौशल तथा निर्णय लेने के कौशल को विकसित किया जा सकता है। पाठ 18 'हम अनेक किंतु एक', कविता भारत देश की विविधिता में एकता को प्रदर्शित करते हुए भारत की अखंडता को दिखा रही है। यह भारत की संस्कृति तथा बहुभाषिकता का प्रदर्शन कर रही है। इस प्रकार की कविता के माध्यम से बच्चों में उत्साह और अपने देश या मातृभूमि के प्रति प्रेम जागृत होता है तथा बच्चे दूसरों की संस्कृति का सम्मान करना सीखते हैं। इकाई के अंत में, 'हिंद देश के निवासी' कविता बच्चों के मनोरंजन हेतु केवल पढ़ने के लिए दी गई है जिससे वे कविता का सस्वर वाचन कर उसका अभिनय करना सीखें तथा कविता के भाव को समझकर उसका रसास्वादन करें। इकाई के पाठोपरांत बच्चों के अभ्यास हेतु विभिन्न प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं जिसमें 'शब्दों का खेल', 'खेल-खेल में सीखें', 'समझिए और लिखिए', 'बातचीत के लिए', 'सोचिए और लिखिए' जिनके माध्यम से बच्चों में मौखिक अभिव्यक्ति का विकास तथा सोचने समझने की शक्ति का विकास तथा खेल-खेल में अधिगम पर बल दिया गया है। पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में

कल्पना विशेष स्थान रखती है, बच्चे इस उम्र में पर्याप्त कल्पनाशील होते हैं, वे अपनी दिनचर्या से ढेरों कल्पनाएँ या फिर कुछ न कुछ सोचने और करने का प्रयोग करते रहते हैं। पाठ के अभ्यास में ऐसे प्रश्न दिए गए हैं, जिससे बच्चे कल्पना के संसार में प्रविष्ट हों। ऐसे प्रश्न बच्चों पर सही और गलत उत्तर का दबाव नहीं डालते हैं। 'चंद्रयान (संवाद)' पाठ में प्रश्न दिया है कि अगर चंद्रयान-3 से जुड़े वैज्ञानिक आपके विद्यालय में आएँ तो आप उनसे कौन-से प्रश्न पूछना चाहेंगे? 'भारत' पाठ के अंत में कागज से 'मुकुट' बनाने की गातिविधि तथा 'बोलने वाली माँद' पाठ के अंत में कागज से 'सियार' का मुखौटा बनाने की गतिविधि बच्चों को क्रिया-आधारित सीखने के अवसर प्रदान करती है।

पाठ्यपुस्तक 'वीणा 1' को पढ़ाने के लिए प्रारंभिक स्तर के शिक्षकों के लिए कुछ सुझाव

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बच्चों को सिखाने के लिए खेल आधारित अधिगम पर बल दिया गया है। शिक्षकों को पाठ पढ़ाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि कक्षा का माहौल नीरस न हो और बच्चे खेल-खेल में पाठ को आनंदपूर्ण तरीके से पढ़ और समझ सकें।
- शिक्षक कक्षा में पाठ का विषय एकीकृत-विधि के माध्यम से पढ़ाएँ जिससे बच्चे भाषा के साथ साथ, गणित और पर्यावरण को भी समझ पाएँ। पाठ को समझाने के लिए, शिक्षक अभिनय या संवादों का प्रयोग कर सकते हैं।
- शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों को पाठ (कविता, कहानी) उनके आस-पास के परिवेश से जोड़ते हुए पढ़ाएँ, ताकि बच्चे वास्तविक अनुभव प्राप्त कर सकें। जैसे— 'सीखो' कविता में शिक्षक बच्चों को बागीचे में ले जाकर फूल, पौधे, पत्ते, सूरज आदि वस्तुओं के माध्यम से कविता शिक्षण के साथ-साथ वास्तविक अनुभव भी प्रदान कर सकते हैं जो बच्चों के लिए एक ठोस अनुभव ज्ञात होगा।
- अनुभव आधारित अधिगम के अंतर्गत शिक्षक कक्षा में पाठोपरांत विभिन्न गतिविधियाँ करवा सकते हैं। जिस गतिविधि से बच्चे स्वयं अनुभव करके सीखते हैं, उसे वे याद रखते हैं और कक्षा का वातावरण भी नीरस नहीं होता। इसके लिए शिक्षक कागज मोड़ने (पेपर फोल्डिंग) की गतिविधि करवा सकते हैं। इस गतिविधि से बच्चों में सहभागिता की भावना को बढ़ाया जा सकता है।
- शिक्षक बच्चों के दिन-प्रतिदिन के अनुभवों को पाठ की विषयवस्तु के साथ एकीकृत करके पढ़ा सकते हैं। इससे शिक्षक बच्चों में पाठ को ध्यान से पढ़ने, सुनने की रुचि विकसित कर सकते हैं।
- प्रारंभिक शिक्षक के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि वे इस बात का ध्यान रखें कि कक्षा में पाठ पढ़ाते समय कक्षा का माहौल नीरस तथा उबाऊ ना हो। इसके लिए शिक्षक को पढ़ाने के दौरान बीच-बीच में बच्चों से अंतःक्रिया करनी आवश्यक है, शिक्षक इससे बच्चों की रुचि बढ़ा सकते हैं और साथ ही नीरसता और उबाऊपन दूर कर सकते हैं।
- शिक्षकों को पाठ पढ़ाते समय ध्यान रखना चाहिए कि वे बच्चों के समक्ष ऐसे उदाहरणों को

पेश करें जो बच्चों में नैतिकता, पढ़ने में रुचि, वैज्ञानिक सोच, सहयोगात्मक भाव के साथ-साथ जिम्मेदार नागरिक की भावना का विकास करें।

- शिक्षकों को पाठ पढ़ाते समय कक्षा में विषयवस्तु से संबंधित शिक्षण सहायक सामग्री (चार्ट, फ्लैश कार्ड, पपेट, कठपुतली) का प्रयोग करना चाहिए, ताकि बच्चों के लिए पाठ को समझना सरल हो जाए और संप्रत्ययों को सरलाता से ग्रहण कर सकें।
- बच्चों को पाठों (विषयवस्तु) से संबंधित अवधारणाओं को समझाने के लिए, शिक्षकों को नियमत: प्रशिक्षण लेना चाहिए। प्रशिक्षण से नए-नए तरीकों, विषयवस्तु की अवधारणाओं तथा बच्चों के समक्ष पाठ्यक्रम से संबंधित बातों को प्रस्तुत करने की नई युक्तियाँ भी सीखी जा सकती हैं।
- भाषायी कौशलों को सिखाने के लिए, बच्चों से कौन-कौन सी गतिविधि कराई जानी चाहिए और इसके लिए कौन-कौन सी गतिविधि निर्धारित हैं; उसकी समझ विकसित करनी आवश्यक है।
- पाठों को रुचिकर बनाने हेतु शिक्षक को कक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) का प्रयोग करना आना चाहिए।
- बच्चों में सभी पक्षों (मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक, नैतिक, व्यावहारिक) के विकास के लिए, शिक्षक द्वारा कक्षा में इससे संबंधित गतिविधि करवानी चाहिए।

- बच्चों में भाषायी कौशलों के साथ-साथ उनमें तार्किक चिंतन, रचनात्मक लेखन, समस्या समाधान कौशल, निर्णय क्षमता एवं संप्रेषण क्षमता के विकास के लिए शिक्षक द्वारा विभिन्न गतिविधियाँ कक्षा में करवानी चाहिए ('शब्दों का खेल', 'बूझो तो जानें', 'आइए बनाइए', 'सोचिए और लिखिए')।

'किसान की होशियारी' नामक पाठ-पढ़ाने का एक अनुभव

'किसान की होशियारी' एक रोचक कहानी है। कक्षा-शिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थी ने कहानी को बड़े ही रुचिपूर्ण तरीके से पढ़ाया। उन्होंने कहानी को समझाने के लिए बच्चों के समक्ष कहानी से संबंधित चित्रों के रंगीन फ्लैश कार्ड प्रस्तुत किए फ्लैश कार्ड से बच्चे न सिर्फ कहानी को मनोरंजन और उत्सुकता के साथ सुन रहे थे, अपितु वे अपने आस-पास के वातावरण को भी जोड़कर पाठ को समझ रहे थे। कहानी प्रस्तुतीकरण के दौरान कहानी के पात्रों (किसान और भालू) का अभिनय भी किया गया और उनके बीच के संवाद को प्रस्तुत किया गया। इससे बच्चों में अभिनय कौशल और बुद्धिमानी के साथ-साथ फसलों की जानकारी विकसित हुई। पाठ पढ़ाने के लिए बच्चों के मूल्यांकन हेतु प्रशिक्षणार्थी ने भाषा की बात में बच्चों को 'विराम चिह्न', 'मुहावरे' सिखाएँ और बच्चों को पाठ पढ़ने को कहा फिर देखा गया कि बच्चे पाठ में उद्धत विराम चिह्नों और मुहावरों को सही तरह से प्रयोग कर के पाठ पढ़ रहे थे। इससे बच्चों में व्याकरणिक समझ विकसित हुई। उनके सोचने समझने की शक्ति को बढ़ाने के लिए 'वर्ग पहेली' हल करवाई। मौखिक अभिव्यक्ति और लिखित कौशल के विकास के लिए उनसे पाठ से संबंधित बातचीत की तथा कुछ प्रश्नों के जवाब सोचकर लिखने के लिए कहा गया। अंत में कला विषय को एकीकृत करते हुए सभी बच्चों से भालू का चित्र बनाने और उसमें रंग भरने को कहा गया। चित्र बनाना बच्चों को बहुत अच्छा लगता है, उन्होंने भालू के विभिन्न प्रकार के चित्र बनाए और रंग भरकर दिखाए। इससे बच्चों में कला-कौशल विकसित करने का प्रयास किया गया। शिक्षण के दौरान सभी बच्चों की सहभागिता थी। उन्होंने पाठ को रुचिपूर्ण तरीके से सुनकर आनंद लिया और अंत में पाठ से संबंधित गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

निष्कर्ष

कक्षा 3 के लिए हिंदी भाषा की पुस्तक 'वीणा 1' के आलोक से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस पुस्तक का निर्माण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित सुझावों के अनुरूप किया गया है। समग्र रूप से इस पाठ्यपुस्तक में प्राचीन परंपरा से चंद्रयान तक की यात्रा को भाषा और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है तथा विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को पाठों के अंत में सम्मिलित करते हुए ध्यान रखा गया है कि वे बच्चे के 360 डिग्री बहुआयामी मूल्यांकन प्रणाली का अनुसरण करें, जिससे बच्चों का समग्र विकास हो। पाठ्यपुस्तक में साहित्य की विभिन्न विधाओं (कविता, कहानी, एकांकी, संवाद, पत्र) को लिया गया है। पाठोपरांत विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में भाषायी

कौशलों के साथ-साथ उनमें तार्किक चिंतन, रचनात्मक लेखन, समस्या समाधान कौशल, निर्णय लेने की क्षमता एवं संप्रेषण क्षमता का विकास किया गया है। इस प्रकार पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण के बाद हम देखते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का अक्षरशः अनुपालन करते हुए यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मूल्यों और प्रवृर्तियों का विकास करती है जो विद्यालयी प्रारंभिक स्तर की शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस पाठ्यपुस्तक को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित मूल संकल्पना एवं सिद्धांतों को फलीभूत करने के लिए विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 द्वारा दिए गए सुझावों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है जिससे शिक्षण प्रक्रिया के दौरान उचित शिक्षण उपगणों एवं आकलन प्रविधियों का प्रयोग करके प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. *वीणा — कक्षा 3 के लिए हिंदी पाठ्यपुस्तक*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.